जाह्नवी का मनोविश्लेषणात्मक अध्याय

मनीषा,

शोधार्थी,

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

हिंदी कथा साहित्य में 'जैनेंद्र' की कहानियों में 'मनोविश्लेषणवाद' का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है। 'जैनेंद्र' ने मनोवैज्ञानिक कथाकार के रूप में हिंदी कथा साहित्य को एक नई दृष्टि दी।

मनोविश्लेषणवाद, जिसका सिद्धांत 'संगमंड फ्रायड' ने दिया। फ्राइड के अनुसार, व्यक्ति का अवचेतन जगत ही, चेतन जगत को प्रभावित करता है और व्यक्ति उसी के अनुकूल काम करता है। इसलिए फ्राइड अवचेतन जगत को चेतन जगत की अपेक्षा शक्तिशाली मानते हैं। साहित्य जगत की बात करें, तो व्यक्ति मन की अलग–अलग क्रियाकलापों, उनके अंतर्मन के विश्लेषण को ही 'जैनेंद्र' ने अपने साहित्य का आधार बनाया।

'जैनेंद्र' की कहानियां जीवन एवं जीवन में मुक्ति के द्वंद्वात्मक संघर्ष की कहानी है जो मानवीय भावों की उदात्तता और मानव जीवन की गरिमा को प्रतिस्थापित करती है। 'जैनेंद्र' की कहानी जाह्नवी प्रेम संघर्ष, निष्ठा, त्याग, समर्थन एवं संवेदना को वाणी देते हुए साथ में एक बेचैनी पैदा करती है। इस कहानी में मनोवैज्ञानिकता होने के कारण कथा धरातल पर संशय और प्रश्न है, उत्तर अथवा समाधान नहीं। इसके पात्र जीवन की घटनाओं की संभावनाओं और उन रहस्यों को खोजते हैं। व्यक्ति के मन की जटिलताओं का सूक्ष्म वर्णन इस कहानी में देखने को मिलता है। जहाँ जाह्नवी (कहानी की नायिका) बड़े प्रयास से हाथ में रोटी का टुकड़ा लिए कौओं को बुला–बुलाकर खिलाती हुई कहती है।

"दो नैना मत खाइयो
पीउ मिलन की आस"[1]

इन पंक्तियों से यह स्पष्ट है कि जाह्नवी किसी की प्रतीक्षा में है, यह प्रतीक्षा कहानी को रहस्यमई बनाए रखती है किंतु अंत तक भी यह स्पष्ट नहीं हुआ कि मैं यह किसकी प्रतिक्षा में है, जो कभी आया ही नहीं। बस अनंत तक लंबी प्रतीक्षा और नीरसता का जीवन चलता रहा। यह कहानी युग यथार्थ की बदलती मन स्थिति और संवेदना को यथार्थ के रूप में अभिव्यक्त करती है। यथार्थ भी भोगा हुआ, जिसे वह रोज जी रही है। जहाँ यह दोनों शब्द 'भोगा हुआ' और 'यथार्थ' अलग है। जहाँ लेखक अपने व्यक्तिगत जीवन में यथार्थ को भोगता है, वह स्वयं अनुभव करता है, जिस पर 'राजेंद्र यादव' का कथन है.– ***"हम सबने अलग–अलग अपने याथार्थ को भोगा और उसे वाणी दी है।"[2]***

अपने यथार्थ को अपने अनुसार भोगा जाता है, तो इसका अर्थ यह हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति चाह वह लेखक हो, रचनाकार हो या किसी अन्य क्षेत्र का हो, सभी यथार्थ, सभी के जीवन के अनुभव अलग–अलग होते हैं। उसे प्रत्येक व्यक्ति भिनन रूप में ही भोगता है और उसे अभिव्यक्त करता है। अतः ऐसा यथार्थ, जो लेखक ने व्यक्तिगत जीवन में भोगा ही नहीं, उसकी रचना दृष्टि का माध्यम नहीं हो सकता। स्त्री को केंद्र में रखती हुई यह कहानी समय से परे है, जहाँ आधुनिकता जैसे शब्द का ठप्पा लगाने अथवा ना लगाने से कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि यह मानवीय संवेदनाएं हैं जिनका सीध संबंध भावनाओं से होता है। आधुनिकता या समाज से नहीं।...."संबंधों की तलाश में, संबंधें से

कटकर अथवा संबंधों के परिणाम को मांगती हुई नारी अपने आप में नितांत अकेली पड़ती गई।''[3]

'कागा चुन चुन खाइयो

दो नैना मत खाइयों

मत खाइयो

पिया मिलन की आस'[4]

आंतरिक पीड़ा, जिसके कारण व्यक्ति जीवन में अन्य संबंधों को नकारने लगता है, निरंतर किसी की प्रतीक्षा में, या किसी से आहत होने पर, अपने–आप को जिंद और आंतरिक संकल्पों में बांध लेता हैं। जो इस कहानी की नायिका (जाह्नवी) के चरित्र में दिखाई पड़ता है। ऐसी स्थिति, जो अन्य को देखने से पीड़ा प्रतीत हो वह स्थिति, 'जाह्नवी' को शायद एक संतोष दे रही है। किसी की प्रतीक्षा का संतोष, किसी के प्रति समर्पण–भाव का संतोष। व्यवहारिक तौर पर देखा जाए, तो ऐसी स्थिति एकदम नीरस और 'नेगेटिव' जिंदगी बना देती है। जिसमें 'जाह्नवी' दिन प्रतिदिन घुलती जा रही है। उसकी चंचलता, उसकी मुस्कुराहट उसका सौंदर्य... सब कही लुप्त है। वह मौन रहती है और स्वयं को इस एकांत में रमा लेती है। जो व्यक्ति मन के यथार्थ एवं संवेदनशीलता को जागरूक करता है।

समाज के अन्य पहलू भी इस कहानी अप्रत्यक्ष होते हैं, जहाँ यह कहानी स्त्री मन की संवेदना को उजागर करती है, वहीं उन सुविधाओं के प्रति मसज का व्यवहार तथा अन्य स्त्री के ही द्वारा उसकी अवहेलना को भी दिखाती है। एक स्त्री के जीवन में विवाह संबंधी निर्णय जब समाज निर्धारित करता है, तो वह संबंध आदर्श कहलाता है। वही संबंध स्वयं स्त्री द्वारा तय कर लेना, उसके चरित्र को चित्रित कर देने में सक्षम है। कहानी में गहरी चोट पहुंचती है। जहाँ एक स्त्री ही, अन्य स्त्री भावनाओं को समाज की 'पितृसत्तात्मक' सोच के आदर्शों में बंधे शब्दों से कुचलकर तार–तार कर देती है।

''वह लड़की आशनाई में फंसी थी, पढ़ी–लिखी सब एक जात की होती हैं। कैसी सीधी–भोली बातें करती थी। वह लड़की घर में आती तो मेरा मुँह दिखाने लायक नहीं रहता। आखिर, परमात्मा ने इज्जत बचा ली।''[5]

यही समाज की विडंबना है, स्वयं के ही द्वारा बनाई गई परंपराओं को निभाना और उन्हें प्राथमिकता देने में यह स्मरण ही नहीं रहता कि व्यक्ति के जीवन के लिए परम्पराएँ होती हैं, परंपराओं के लिए जीवन नहीं होता। भावनाओं को महत्व न देकर व्यक्ति को रीतियों की राह दिखाना, उदासी और अकेलेपन की ओर इंगित करता है, भले ही वह सामाजिक तौर पर किसी के साथ हो। आधुनिक समय में लिखी जा रही ऐसी कहानियाँ आधुनिक समय में लिखी जा रही ऐसे कहानियाँ आधुनिकता के साथ परंपरा पर भी प्रश्न उठाती है। एक स्थान पर जहाँ हाह्नवी के द्वारा किसी की प्रतीक्षा करना, उसका समर्पण भाव देख... लेखक के मन में यह भाव आता है– ''अगर वह लड़की मेरी होती तो मुझे यह अपना सौभाग्य मालूम नहीं हुआ कि जाह्नवी मेरी लड़की नहीं है।''[6]

परिवार के द्वारा किसी की भावनाओं का दमन करना, इज्जत और शान के नाम पर अपने ही बच्चों को उनकी व्यथा के प्रति संवेदनहीनता दिखाना कहां तक उचित है? लेखक के द्वारा कहा गया यह वाक्य विशेष रूप से स्त्री मन को, उसकी पीड़ा को समझने तथा उसे सहानुभूति देने का कार्य करता है भले ही वे प्रत्यक्ष ना हो। भले ही लेखक, जाह्नवी के पिता ना हो, किंतु जाह्नवी के अंतर्मन को उसके प्रति संवेदना को स्वीकार्यता मिलना कहानी में स्फूर्ति लाता है जिसकी अब आवश्यकता है।

खासतौर से जब किसी स्त्री के प्रेम का विषय हो उसकी इच्छाओं का विषय हो, क्योंकि समाज की अवधारणा बहुत पुरानी है यदि पुरूष प्रेम करें, किसी की प्रतीक्षा करें, किसी से विवाह

का प्रस्ताव रखे, तो अंततः उसकी इच्छा को स्वीकार कर ही लिया जाता है, बिना उसके आचरण पर सवाल उठाए। तब भी स्त्री को ही दोष दे दिया जाता है कि स्त्री ने कोई जादू किया होगा और स्त्री स्वयं प्रेम करें, तो सीधा उसके चरित्र पर सवाल कर दिए जाते हैं। उसे कुलक्षिणी, मान–मर्यादा भंग करने वाली बता दिया जाता है जबकि आत्मिक भाव, सेवेदनाएं तो सभी में एक सी होती है। 'जैनेंद्र' आध्यात्मिक और नैतिकता को प्राथमिकता देते हैं, किंतु 'जैनेंद्र' की दृष्टि में प्रेम संबंधी विचार इस प्रकार हैं – ''विवाह दायित्व लाता है और प्रेम मुक्त है। विवाह जीवन को विस्तार देता है परिधीय केंद्र नहीं देता''[7]

'जैनंद्र' के विचार (जाह्नवी) कहानी में 'जानह्वी' द्वारा साहस पूर्वक उसकी सच्चाई, उसके होन वाले पति को पत्र द्वारा बतलाने का प्रमाणहै। ''लेकिन मेरे चित्र की हालत इस साय ठी हीं है और विवाह जैसे धार्मिक अनुष्ठान की मात्रता मुझ में नहीं है.... एक अनुगता विवाह द्वारा जाएगी लेकिन विवाह द्वारा सेविका नहीं मिलनी चाहिए, धर्म पत्नी मिलनी चाहिए... वह जीवनसंगिनी भी हो।''[8]

यह तो सत्य हे, शारीरिक भूख की तृप्ति का माध्यम शरीर बन जाता है लेकिन आत्मिक संतोष, जो आंखों में झलके, वह इस माध्यम से नहीं मिलता। आत्मा की तृप्ति तो प्रेम से ही होती ह शरीर से नहीं। प्रे में जब स्वयं के अस्तित्व का समर्पण भाव आ जाता हे तो वह प्रेम अनन्य प्रेम हो जाता है। उसकी पवित्राता में किसी प्रकार का संशय नहीं रहता।

निष्कर्ष

कहानी की यह पंक्ति 'कागा चुन चुन खाइयों' पूरी कहानी को बांधकर रखती है। मनुष्य के जीवन में प्रेम तथा उसकी भावनाएं जीवन में आत्म प्रकाश फैलाने का कार्य करती है। प्रेम में व्यथा, वियोग, सहज रूप से मिलता हजै, जो अनिवार्य भी है क्योंकि इनके होने से मनुष्य में सभी विकार जैसे अंहकार, ईर्ष्या, अज्ञान आदि का त्याग हो जाता है। कहानी में कौओं द्वारा शरीर नोचा जाना भौतिक जगत की विषमताओं का भी प्रतीक है और नैनों को छोड़ देना अर्थात उस शाश्वत सत्य को जान लेने की उत्कंठा और आत्मिक तृप्ति का संकेत है। जहां कोई विकार मन के भीतर नहीं रह जात।

संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ. शशि शर्माः हिंदी कहानी, प्रकाशक (के. एल. पचौरी) प्रथम संस्करणः 2012 दिल्ली 'जैनेंद्र' जाह्नवी कहानी से
2. शेखावतः नई कहानी, रामा पब्लिशिंग हाउस, जयपुर–3, उपलब्धि और सीमाएं, पृ. सं. 145
3. रघुवीर सिन्हाः आधुनिक हिंदी, कहानी, पृष्ठ संख्या 41
4. डॉ. शशि शर्माः हिंदी कहानी, प्रकाशक (के. एल. पचौरी) प्रथम संस्करणः 2012, दिल्ली 'जैनेंद्र' जाह्नवी कहानी से
5. वहीं सेः पृ. संख्य 68
6. वहीं से पृ. सं. 62
7. हिंदी साहित्य : जाह्नवी कहानी की समीक्षा (जैनेंद्र)
8. डॉ. शशि शर्माः हिंदी कहानी, प्रकाशक (के. एल. पचौरी) प्रथम संस्करणः 2012 दिल्ली 'जैनेंद्र' कहानी से